Shri Padmavati Sahasranamam

श्रीपद्मावती सहस्रनाम स्तोत्रम्

Gurudev Raj Verma

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

शाक्त सम्प्रदाय में जो माहात्म्य भगवती दुर्गा का है, बौद्ध सम्प्रदाय में जो स्थान तारा का है, जैन धर्म में वही स्थान पद्मावती देवी का है। इनकी उपासना से मनुष्य सर्व प्रकार की उन्नति प्राप्त करता है। पद्मावती सहस्रनाम सौभाग्यागमन हेतु एक श्रेष्ठ साधन है। नित्य त्रिकाल संध्या विधिवत इसका पाठ करने से सर्व बाधाओं से मुक्ति मिलती है तथा धन-धान्य का लाभ होता है। मनुष्य को विशेष लाभ हेतु श्रेष्ठ जैनाचार्य का मार्गदर्शन ग्रहण करना चाहिये।

(1)

प्रणम्य परया भक्त्या देव्याः पादाम्बुजं त्रिधा।
नामान्यष्टसहस्राणि वक्तुं तद्भक्तिहेतवे।1।
श्रीपार्श्वनाथचरणाम्बुजचंचरीका भव्यान्धनेत्रविमलीकरणे श्लाका।
नागेन्द्रप्राणधरणीधरधारणाभृत मां पातु सा भगवती नितरामथेभ्यः।2।

पद्मावती पद्मवर्णा पद्महस्तापि पद्मिनी।

पद्मासना पद्मकर्णा पद्मास्या पद्मलोचना।3।

पद्मा पद्मदलाक्षी च पद्मी पद्मवनस्थिता।

पद्मालया पद्मगन्धा पद्मरागोपरागिका।4।

पद्मप्रिया पद्मनाभिः पद्मांगा पद्मशायिनी।

पद्मवर्णवती पूता पवित्रा पापनाशिनी।5।

प्रभावती प्रसिद्धा च पार्वती पुरवासिनी।

प्रज्ञा प्रह्लादिनी प्रीतिः पीताभा परमेश्वरी।6।

पातालवासिनी पूर्णा पद्मयोनिः प्रियवंदा।

प्रदीप्ता पाशहस्तां च परा पारा परंपरा।7।

पिंगला परभा पूरा पिंगा प्राची प्रतीचिका।

परकार्यकरा पृथ्वी पार्थिवी पृथिवी पविं।8।

पल्लवा पानदा पात्रा पवित्रांगी च पूरना।

प्रभा पताकिनी पीता पन्नगाधिपशेखरा।9।

पताका पद्मकटिनी पतिमान्यपराक्रमा।

पदाम्बुजधरा पुष्टिः परमागमबोधिनी।10।

परमात्मा परानन्दा परमा पात्रपोषिणी।

पंचवातगतिः पौत्री पाखंडघ्नी पितामही।11।

प्रहेलिकापी प्रत्यंचा पृथुपापौधनाशिनी।

पूर्णचन्द्रमुखी पुण्या पुलोमा पूर्णिमा यथा।12।

पावनी परमानन्दा पण्डिता पण्डितेडिता।

प्रांशुलभ्या प्रमेयाः च प्रभा प्राकारवर्तिनी।13।

प्रधाना प्रार्थिता पार्थ्या पट्टदा पंक्तिपूर्यनी।

पातालस्येवरप्राण प्रेयसी प्रणामामि ताम्।14।

।इति पद्मावतीशतम्।

(2)

महाज्योर्तिमती माता महामाया महासती।

महादीप्तिमती मित्रा महाचण्डी च मंगला।1।

महिषी मानुषी मेघा महालक्ष्मीर्मनोहरा।

महापहारनिम्नांगा मानिनी मानशालिनी।2।

Shri Raj Verma Ji
Contact- 09897507933, 07500292413

मार्गदा सुमुहूर्ता च माध्वी मधुमती मही।

महेश्वरी महेज्या च मुक्ताहारविभूषणा।3।

महामुद्रा मनोज्ञा च महाश्वेतातिमोहिनी।

मधुप्रिया मतिर्माया मोहध्नी च मनस्विनी।4।

माहिष्मती महावेगा मानदा मानहारिणी।

महाप्रभाव मदना मंत्रवश्या मुनिप्रिया।5।

मंत्ररूपा च मंत्राज्ञा मंत्रदा मंत्रसागरा।

मधुप्रिया महाकाया महाशीला महाभुजा।6।

महाशना महारम्या मनोभेदा महासमा।

महाकान्तिधरा मुक्तिर्महाव्रतसहायिनी।7।

मधुश्रवा मूर्च्छना च मृगाक्षी च मृगावती।

मृणालिनी मनःपुष्टिर्महाशक्तिर्महार्थद्रा।8।

मूलधारा मृडानी च मत्तमातंगगामिनी।

मन्दाकिनी महाविद्या मर्यादा मेघमालिनी।9।

मातामही मन्दगतिः महाकेशी महीधरा।

महोत्साहा महादेवी महिला मानवर्द्धिनी।10।

महाग्रहहरा मारी मोक्षमार्गप्रकाशिनी।

मान्या मानवती माति मणिनूपुरशोभिनी।11।

मणिकांतिधरा मीना महामतिप्रकाशिनी।

इन्द्रेश्वरी दिव्यशिखे पिनाकारस्वरूपिणी।12।

।इति महाज्योतिर्मतीशतम्।

(3)

जिनमाता जिनेन्द्रा च जयन्ती जगदीश्वरी।

जया जयावती जाया जननी जनपालिनी।1।

जगन्माता जगन्माया जगज्जैत्री जगज्जिता।

जागरा जर्जरा जैत्री यमुनाजलवासिनी।2।

योगिनी योगमूला च जगद्धात्री जलन्धरा।

योगपट्टधरा ज्वाला ज्योतिरूपा च ज्वालिनी।3।

ज्वालामुखी ज्वालमाया क्षालनी च जगद्धिता।

जैनेश्वरी जिनाधारा जीवनी यशपालिनी।4।

Shri Raj Verma Ji
Contact- 09897507933, 07500292413

यशोदा ज्यायसी ज्येष्ठा ज्योस्ना च ज्वरनाशिनी।

क्षाररूपा जरा जीर्णा जांगुलाऽऽमयतर्जिनी।5।

युगभारा जगन्मित्रा यंत्रिणी जन्मभूषिणी।

योगेश्वरी च योगांगा योगयुक्ता युगादिजा।6।

यथार्यवादिनी जाम्बू नंदिकान्तिधरा जया।

नारायणी नर्मदा च निमेषे नर्तनी नरी।7।

नीलानन्ता निराकारा निराधारा निराश्रया।

नृपवस्या निरामान्या विसंगा नृपनन्दिनी।8।

नृपधर्ममयी नीति तोतिला नरपालिनी।

नंद्या नंदिवती निष्ठा नीरदा नागवल्लभा।9।

नृत्यप्रिया नन्दिनी च नित्यानेका निरामिषा।

नागपाशधरा नौका निःकलंका निरागसा।10।

नागवल्ली नागकन्या नागिनी नागकुण्डली।

निद्रा च नागदामिनी नेत्रा नाराचवर्षिणी।11।

निर्विकारी च निर्वैरा नागनाथेश वल्लभा।

निर्लोभा च नमस्तुभ्यं नित्यानन्द विधायिनी।12।

।इति जिनमाताशतम्।

(4)

वज्रहस्ता च वरदा वज्रशैला वरूथिनी।

वाचा वज्रायुधा वाणी विजया विश्वव्यापिनी।1।

वसुदा बलदा वीरा विषया विषवर्द्धिनी।

वसुन्धरा वरा विश्वा वर्णिनी वायुगामिनी।2।

बहुवर्णा बीजवती विद्या बुद्धिमती विभा।

विद्या वामवती वामा निविद्धा वंशभूषणा।3।

वरारोहा विशोका च वेदरूपा विभूषणा।

विशाला वारुणीकल्पा बालिका बालकप्रिया।4।

वर्तिनी विषहा बाला विविक्ता वनवासिनी।

वन्ध्या विधिस्तुनावल्ली विश्वयोनिर्बुधप्रिया।5।

बलदा वीरमाता च वसुधा वीरनन्दिनी।

वरायुध धरावेषी वारिदा बलनाशिनी।6।

बुधमाता वैद्यमाता बन्धुरा बन्धुरूपिणी।

विद्यावती विशालाक्षी वेदमाता विभास्वरी।7।

वात्याली विषमावैस्या वेदवेदांगधारिणी।

वेदमार्गरता व्यक्ता विलोमा वादशालिनी।8।

विश्वमाता विकम्पा च वशंजा विश्वदीपिका।

वसन्तरूपिणी वर्षा विमला विवुधायुधा।9।

विज्ञानिनी पवित्रा च विपंची बंधमोक्षिणी।

विषरूपवती वर्द्धा विनीता विशिखा विभा।10।

व्यालिनी व्याललीला च व्याप्ता व्याधिनाशिनी।

विमोहा वाणसन्दोहा वर्द्धिनी वर्द्धमानका।11।

ईशानी तोतरा भद्रा वरदायी नमोऽस्तुते।

व्यालेश्वरी प्रियपाणा प्रेयसी वसुदायिनी।12।

।इति वज्रहस्ताशतम्।

(5)

कामदा कमला काम्या कामांगा कामसाधिनी।

कलावती कलापूर्णा कलाधारा कनीयसी।1।

कामिनी कमनीयांगा कनत्धांचनसन्निभा।

कात्यायनी कान्तिदा च कमला कामरूपिणी।2।

कामिनी कमलामोदा क्रमा कान्तिकरी प्रिया।

कायस्था कालिका काली कुमारी कालरूपिणी।3।

कालाकारा कामधेनुः काशी कमललोचना।

कुन्तला कनकाभा च काश्मीरा कुंकुमप्रिया।4।

कृपावती कुण्डलिनी कुण्डलाकारशायिनी।

कर्कशा कोमला काली कौलिकी कुलबालिका।5।

कालचक्रधरा कल्पा कालिका काव्यकारिका।

कविप्रिया च कौशाम्बी कारिणी कोशवर्द्धिनी।6।

कुशावती किरालाभा कोशस्था कान्तिवर्द्धिनी।

कादम्बरी कट्ठोरस्बा कौशांम्या कोशवासिनी।7।

कालघ्नी कालहननी कुमारजननी कृतिः।

कैवल्यदायिनी केका कर्महा कालवर्जिनी।8।

Shri Raj Verma Ji
Contact- 09897507933, 07500292413

कलंकरहिता कन्या कारुण्यलयवासिनी।

कर्पूरामोदिनिःश्वासा कामबीजवती करा।9।

कलीना कुन्दपुष्पाभा कुर्कटोरगवाहिनी।

कलिप्रिया कामना च कमठोपरिशायिनी।10।

कमठोरा कठिना क्रूरा कुन्दला कदलीप्रिया।

क्रोधिनीऽक्रोधरूपा च कहूचाकारनर्तिनी।11।

कम्बोजिनी काण्डरूपा कोदण्डकरधारिणी।

क्रुद्ध क्रीडावती क्रीडा कुमारनन्ददायिनी।12।

कमलाशना केतकी च केतुरूपा कुतूहला।

कोपिनी कोपरूपा च कुसुमावासवासिनी।13।

।इति कामदाशतम्।

(6)

सरस्वती शरण्या च सहस्राक्षी सरोजगा।

शिवा सती सुधारूपा शिवमाया सुता शुभा।1।

सुमेधी सुमुखी शान्ता सावित्री सायगामिनी।

Shri Raj Verma Ji
Contact- 09897507933, 07500292413

सुरोत्तमा सुवर्णा च श्रीरूपा शास्त्रशायिनी।2।

शान्ता सुलोचना साध्वी साध्वा सुधात्मिका।

शारदा सरला सारा सुवेषा यशवर्द्धिनी।3।

शंकरी शमिता शुद्धा शुद्धा शक्रमान्या शुभंकरी।

शुद्धाहाराताता श्यामा शोभा शीलवती शरा।4।

शीतला सुभगा सर्वा सुकेशी शैलवासिनी।

शालिनी शाक्षिणी सीता सुभिक्षा शिवप्रेयसी।5।

सुवर्णा शोणवर्णा च सुन्दरी सुरसुन्दरी।

शक्तिस्तुता सारिका च सेव्या श्रीः सुजनार्चिता।6।

शिवदूती श्वेतवर्णा शुभ्राभाऽशुभनाशिनी।

सिंहिका सकला शोभा स्वामिनी शिवपोषिणी।7।

श्रेयस्करी श्रेयसी च शौरिः सौदामिनी शुचिः।

सौभागिनी शोषणी च सुगन्धा सुमनःप्रिया।8।

सौरभेयी सुसुरभी श्वेतातपत्रधारिणी।

श्रृंगारिणी सत्यवक्री सिद्धार्थ शीलभूषणा।9।

सत्यार्थिनी च संध्याभा शची संक्रान्ति सिद्धिदा।

संहारकारिणी सिंही सप्तार्चिः सफलार्थदा।10।

सत्या सिन्दूरवर्णाभा सिन्दूरतिलकप्रिया।

सारंगा सुतरा तुभ्यं ते नमोऽस्तु सुयोगिनी।11।

।इति सरस्वतीशतम्।

(7)

भुवनेश्वरी भूषणा च भुवना भूमिपप्रिया।

भूमिगर्भा भूपवन्द्या भुजंगेशप्रिया भगा।1।

भुजंगभूषणाभोगा भुजंगकारशायिनी।

भवभीतिहरा भीमा भूमिर्भीमाट्टाहासिनी।2।

भारती भगतिर्भोगा भगिनी भोगमन्दिरा।

भद्रिका भद्ररूपा च भूतात्मा भूतभंजिनी।3।

भवानी भैरवी भीमा भामिनी भ्रमनाशिनी।

भुजंगिनी भुश्रुंडी च भेदनी भूमिभूषणा।4।

भिन्ना भाग्यवती भासा भोगिनी भोगवल्लभा।

मुक्तिदा भक्तिग्राह्या च भवसागरतारिणी।5।

भारती भास्वरीमूर्त्ति र्भूतिदा भूतिवर्द्धिनी।

भाग्यदा भोग्यदा भोग्या भाविनी भवनाशिनी।6।

भिन्ना भट्टारका भीरु र्भ्रामरी भ्रमरी भवा।

भट्टिनी भाण्डदा भाण्डा भल्लाकी भूरिभंजिनी।7।

भूमिगा भूमिदा भाषा भक्षिणी भृगुभृंगिनी।

भाराक्रान्ता भिनन्दा च भंजिनी भूमिपालिनी।8।

भद्रा भगवती भार्गा वत्सला भगशालिनी।

खेचरी खड्गहस्ता च खण्डिनी खलमर्दिनी।9।

खट्वांगधारिणी खड्वा खडंगा खगवाहिनी।

षट्चक्रभेदविख्याता खगपूज्या खगेश्वरी।10।

लांगली ललना लेखा लेषना ललिता लता।

लक्ष्मीर्लक्ष्मवती लक्ष्म्या लाभदा लोभवर्जिता।11।

।इति भुवनेश्वरी शतम्।

(8)

Shri Raj Verma Ji
Contact- 09897507933, 07500292413

लीलावती ललामाभा लोहमुद्रा लिपिर्प्रिया।

लोकेश्वरी च लोकांगा लब्धिर्लोकान्तपालिनी।1।

लीला लीलांगदा लोला लावण्या ललितार्थदा।

लोभदा लावनिर्लका लक्षणा लक्ष्यवर्जिता।2।

उर्मोर्वसी उदीची च उद्योतोद्द्योतकारिणी।

उद्धारण्य धरोद्क्र्या उद्धामोद्गनिवासिनी।3।

उदाहारो तमोतंसो औषध्युदधितारिणी।

उत्तरोत्तरवादिन्यो धराधरनिवासिनी।4।

उत्कीलिन्युत्कीलनी च उत्कीर्णोकाररूपिणी।

ॐकाराकार रूपा च अम्बिकाऽम्बरचारिणी।5।

अमोघा सापुरी चान्ताऽणिमादिगुणसंयुता।

अनादिनिधनाऽनन्ता चाटुलीदाहनासिनी।6।

अर्पणार्धबिन्दुधरा लोकालल्यालिवांगना।

आनन्दा नन्ददा लोका राष्ट्रसिद्धिप्रदानका।7।

अवन्याश्रमपि मूर्त्ति रजीर्णाजीर्णहारिणी।

Shri Raj Verma Ji
Contact- 09897507933, 07500292413

अहिकृत्य रजाजारा ॐकार रतिरत्पदा।8।

अनुरूपार्थ मूर्त्तिघ्नी क्रीडा कैरवपालिनी।

अनारुहाश्रुगा भेदा छेद्या च आकाशगामिनी।9।

अनन्तरा साधिकारा त्वांगा अन्तरनाशिनी।

अलका यवना संध्या सीता शिखरधारिणी।10।

अहिनाथप्रियप्राणा नमस्तुभ्यं महेश्वरी।

आकर्षण्याधरा रागा मन्दा मोदावधारिणी।11।

।इति लीलावतीशतम्।

(9)

त्रिनेशा त्र्यम्बिका श्री त्रिपुरभैरवी।

त्रिपुष्ठा त्रिफणा तारा तोतला त्वरिता तुला।1।

तपप्रिया तापसी च तपोनिष्ठा तपस्विनी।

त्रैलोक्यदीपिका त्रेधा त्रिसंध्या त्रिपदाश्रिया।2।

त्रिरूपा त्रिपदा त्राणा तारा त्रिपुरसुन्दरी।

त्रिलोचना त्रिपथगा तारामानविमर्दिनी।3।

धर्मप्रिया धर्मदा च धर्मिणी धर्मपालिनी।

धारा धर धरा धारा धात्री धर्मांग पालिनी।4।

धौता धृतिधुरा धारा धुनिनी च धनुर्धरा।

ब्रह्माणी ब्रह्मगोत्रा च ब्राह्मणी ब्रह्मपालिनी।5।

ब्राह्मी विद्युत्प्रभा वीरा वीणावासवपूजिता।

गीतप्रिया गर्भधरा गामिनी गजगामिनी।6।

गंगा गोदावरी गौर्गा गायत्री गणपालिनी।

गोचरी गोमती गुर्वाऽगाधा गंधारिणी गुहा।7।

गरीयसी गुणोपेता गरिष्ठा गरमर्दिनी।

गंभीरा गीता गुरुरूपा च गर्वापहारिणी।8।

गृहिणी ग्राहिणी गौरी गान्धारी गंधवासिनी।

गारुड़ी ग्रसिनी गूढा गौहनी गुणहायनी।9।

चक्रमध्या चक्रधरा चित्रणी चित्ररूपिणी।

चर्चनी चतुरा चित्रा चित्रमाया चतुर्भुजा।10।

चन्द्राभा चन्द्रवर्णा च चक्रिणी चक्रधारिणी।

Shri Raj Verma Ji
Contact- 09897507933, 07500292413

चक्रायुधकरधरा चण्डी चण्डचण्डपराक्रमा ।11।

।इति त्रिनेत्राशतम्।

(10)

चक्रेश्वरी चमूश्चिता चापिनी चंचलानिका।

चन्द्रलेखा चन्द्रभागा चन्द्रिका चन्द्रमण्डला ।1।

चन्द्रकान्तिश्चंद्रम् श्रीश्चन्द्रमण्डलवर्तिनी।

चतुःसमुद्रपारान्ता चतुराश्रमवासिनी ।2।

चतुर्मुखी चन्द्रमुखी चतुर्वर्णफलप्रदा।

चित्स्वरूपा चिदानन्दा चिराचिन्तामणिः ।3।

चन्द्रहासा च चामुण्डा चिंतना चौरबद्धिनी।

चैत्यप्रिया चैत्यलीना चिंतनार्थ फलप्रदा ।4।

ह्रीं रूपा हंसगमनी हाकिनी हिंगुलाहिना।

हलाहलधरा धारा हंसवर्णा च हर्षदा ।5।

हिमानी हरिता हीरा हर्षिणी हरिमर्दिनी।

गोपिनी गौरगीता च दुर्गा दुर्ललिता धरा ।6।

Shri Raj Verma Ji
Contact- 09897507933, 07500292413

दामिनी दीर्घिका दुग्धा दुर्गमा दुर्लभोदया।

द्वारिका दक्षिणा दीक्षा दक्षा दक्षातिपूजिता।7।

दमयन्ती दानवती द्युतिर्दीप्ता दिवागतिः।

दरिद्रहा वैरिदूरा दुर्गतिनाशिनी।8।

दर्पहा दैत्यदासा च दर्शिनी दर्शनप्रिया।

वृषप्रिया च वृषभा वृषारूढ़ा प्रबोधिनी।9।

सूक्ष्मा सूक्ष्मगतिःश्लक्ष्णा धनमाला धनद्युतिः।

छाया छात्रच्छविच्छीरा क्षीरादा क्षेत्ररक्षिणी।10।

अमरी दूतिरात्रिश्च रंगिनी रतिदा रुषा।

स्थूला स्थूलतराऽस्थूला स्थण्डिलाशयवासिनी।11।

स्थिरा स्थानवती देवी घनघोददनिनादिनी।

क्षेमंकरी क्षेमवती क्षेमदा क्षेमवर्द्धिनी।12।

शेलूषरूपिणी शिष्टा संसारार्णवतारिणी।

सदा सहायिनी तुभ्यं नमस्तुभ्यं महेश्वरी।13।

।।प्रशस्ति।।

Shri Raj Verma Ji
Contact- 09897507933, 07500292413

नित्यं पुमान् पठति योनितरां त्रिशुद्ध्या, शौचं विधाय विमलं फणिशेखरायाः। स्तोत्रं द्युनाथ उदिते सुसहस्रनाम, च अष्टोऽत्तरं भवति सो भुवनाधिराजः।1।

तत्कालजातवरगोमलिप्तभूमौ, कुर्याद दृढासनमतीन्द्रियपद्मकाख्यम्।

धूपं विधाय वरगुग्गुलुमाज्ययुक्तं, रक्ताम्बरं वपुषि भूष्य मनः प्रशस्तः।2।

न तस्य रात्रौ भयमस्ति किंचित्, न शोकरोगोद्भवदुःखजालम्। न राजपीडा न च दुर्जनस्य, पद्मावतीस्तोत्र निशम्यतां वै।3।

न बंधनं तस्य न ताडितापं रोग शंकापि मदं किंचित्, न मत्तनागस्य न केसरीभयं यो नित्यपाठी स्तवनस्य पद्मे।4।

न संगरे शस्त्रचयाभिघातः, न व्याघ्रभीतिर्भुवि भीतिभीतिः। पिशाचिनानां न च हाकिनीनां, स्तोत्रं रमायाः पठतीति या वै।5।

न राक्षसानां न च शाकिनानां, न चापदा नैव दरिद्रता च। न चाल्य मृत्योर्भयमस्ति किंचित्, पद्मावतीस्तोत्र निशम्यतां वै।6।

स्तवनं विधाय विधिवद् भुवि पार्श्वभर्तुः, पूजां करोति शुचिद्रव्यचयैर्विधिज्ञः। पद्मावती फलति तस्य मनोऽभिलाषं, नानाविधं भवभवं सुखसारभूतम्।7।

सूपूर्वाह्नमध्याह्नसन्ध्यासु पाठं तथैवावकाशं भवेदेकचितः। भवेत्तस्य लाभार्थं आदित्यवारे करोतीह भक्तिं सदा पार्श्वभर्तुः।8।

शुभापत्यलक्ष्मी भुवाजीन्द्रयूथा गृहे तस्य नित्यं सदा संचरन्ति। नवीनांगनानां गणस्तस्य नित्यं, शिवायाः सुनामावलिं यस्य चित्ते।9।

ममाल्पबुद्धा स्तवनं विधाय करोमि भक्तिं फणिशेखरायाः। यदर्थमन्त्राक्षरव्यंजनच्युतं विशोधनीयं कृपया हि सद्भिः।10।

भो देवि! भो मात! ममापराधं संक्षम्यतां तत्सतवनाभिधाने। माता यथापत्यकृतापराधं संक्षम्यति प्रीत्यपलायनैक्यम्।11।

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana